1/ 151

545

विषय - बचपन की यादों में |

# एक खुशहाल बचपन.... |

आज मेरी गोदभराई है | मेरा आठवाँ महीना .....| अपनी खुशी मैं बातों मे बयाँ नही कर ~~पाऊँगी~~ पारही हूँ | मुझे एक बेटी चाहिए जो बिलकुल मेरी माँ की परछाई हो | इस बच्चे को मैं कभी दुःख पहूँचने नही दूँगी | कभी नही | इसका बचपन बहुत खुशहाल होना चाहिए....., मेरे बचपन जैसा.....| लेकिन कैसे? वह कभी नही हो पाएगा | क्यूँकी हम फ्लाट मे रहते हैं | और मेरा बचपन ..... वह तो गाँव में बीता था | जब जब मैं अपने बचपन को याद करती हूँ न जाने क्यूँ मन में ~~क्यूँ~~ दुःख भरजाता है....| वह इसलिए हो सकता है, कि मेरा बचपन कभी लौट के नही आएगा |

मेरा बचपन ...... मुझे आज भी याद है |

मैं, मेरी दोस्त मीरा और मृदुल | हम तीनो एक ही विद्यालय में पढते थे | मैं अपने बचपन के यादों में खोई हुई थी ~~तब~~ तब ही ~~दरवाजा~~ ~~कोई~~ किसीने दरवाजा खट खटाया | मैंने जाकर देखा तो, ये क्या यह तो मीरा और मृदुल ~~थे~~ हैं | वह मेरी गोदभराई के रस्म के लिए आए ~~थे~~ हैं | मैंने उनका दिल खोल कर स्वागत किया | और हम मेरे कमरे मे गए | और मैंने उन्हें बताया कि उनके आने से पहले मैं उन्ही के बारे में सोच रही थी |

शैतानो का नाम लिया और शैतान हाज़िर .... मीरा तुम्हे याद हैं हम बचपन में कितनी मस्ती करते थे ....। हाँ शिवानी मैं कैसे भूल सकती हूँ ? पीपल का पेड़, रामू काका की दुकान, हमारा विद्यालय, अध्यापकों के साथ की हुई मस्तीयाँ, हाय .... वो भी क्या दिन थे। मृदुल क्या तुम्हे याद हैं, स्कूल न जाकर हम भूत वाली सिनेमा देखने जाते थे, और मीरा कितना डरती थी, डरपोक कहीं की । शिवानी ज्यादा बनो मत तुम भी बहुत डरती थी और डर के मारे मेरा हाथ नोचती थी। हाँ वो, वो तो मैं डरती नही थी वो तो बस ऐसे ही। मीरा को सब याद था। मैंने उन दोनो को चाय पिलाई। मृदुल को किसीका फोन आया और उसे जाना पड़ा। लेकिन कोई बात नही मीरा तो है न। मीरा तुम्हे वो सरला काकी याद हैं, जो हमें पीपल के पेड़ पर से भगा देती थी। हाँ लेकिन उनकी दो महीने पहले ही मृत्यू हो गई। मीरा के बातो पर मुझे विश्वास नही हुआ। लेकिन वह सच था। स्कूल की छुट्टी के बाद हम तीनो किताब लेकर गाँव के बीचों - बीच स्थित पीपल के पेड़ के नीचे इकट्ठा होते। और बहुत से खेल खेलते। एक दूसरे को कीचड़ में गिरा देते और घर जाकर बहुत मार खाते। लेकिन हमारी मस्ती खतम होने का नाम नही लेती। अगले दिन जब हम तीनो स्कूल जा रहे थे तो सरला काकी के बड़े से आम के पेड़ पर आम लटके हुए थे। उन रसीले

14/11/18

आमो को देखकर हमारे मुँह में पानी आगया और हमने आम तोड़े। आम तोड़ते वक्त आम के पेड़ की एक टहनी टूट गई। वहाँ सरला काकी छड़ी लेकर आ रही हैं, हम दुम दबा के वहाँ से भाग गए। और सीधे रामू काका के मिठाई की दुकान पर जाते और लड्डू और ~~जलेबी~~ जलेबीयाँ चोरी करके खाते। गुस्से में रामू काका हमारे पापा से शिकायत करते। फिर पढ़ी मार .......) मैं तो बस हमारे बचपन के यादो मे खो ही गई थी। तभी मीरा ने कहा, शिवानी तुम्हें याद हैं, मृदुल की नई पेंसिल किसी ने तोड़ दी थी, बेचारा कितना दुखी हुआ था। मेरे चेहरे पर छोटी सी मुसकुराहट आई, वो दरसल उसकी पेंसिल मैंने तोडी थी। लेकिन जान बूँझ कर नही, गलती से। तुम उसे बताना मत। मैंने तुम्हें पेंसिल तोडते समय देखा था शिवानी। मीरा को सब पता था।

और दादी अम्मा के पंचतंत्र की ~~कहानीया~~ कहाँनीयाँ? हाँ वह रोज कहानी सुनाती थी। राजकुमार और राजकुमारी की कहानीयाँ, भूत की कहानीयाँ.... वह सब मैं कभी नही भूल पाऊँगी। और मीरा, गोंद लगाई हुई कुर्सी...... अरे तू भूल गई? क्या?

रमेश सर की कुर्सी पर हमने महा चीप्कू गोंद लगा दिया था। और रमेश सर दिन भर कुर्सी पर बैठ रहे। अरे हाँ...., याद आया और हम नही पकड़े गए थे। अच्छा है मीरा को सब याद आया। ~~बच्चे~~

गोद भराई के रस्म के बाद मीरा चली गई। मैं सोच में डूब गई। ~~दिन~~ मेरा बचपन तो बहुत अच्छा गुजरा। ~~प्रकृती~~ पेड़ पौधों के छाँव मे। लेकिन मेरे आने वाले ~~बच्चे~~ का बचपन इस फ्लाट में गुजरेगा जहाँ न उसका पूरा परिवार हैं, न पेड़ पौधो का नामो-निशान। स्कूल से फ्लाट और फ्लाट से स्कूल बस यही होगा। इस दिखावट की ~~स~~ जिंदगी का कोई मतलब नही। मैं आज ही मेरे पति से कहूँगी की फ्लाट से हम कोई घर मे शिफ्ट हो जाए। जहाँ पेड़ ~~पौधे~~ पोधे हो और जहाँ अपनापन हो। मैं अपने बच्चे ~~की~~ का जीवन खुशहाल बनाना चाहती हूँ, न की दिखावट भरी।